भाषा | साहित्य | संस्कृति

प्रश्नचिह्न

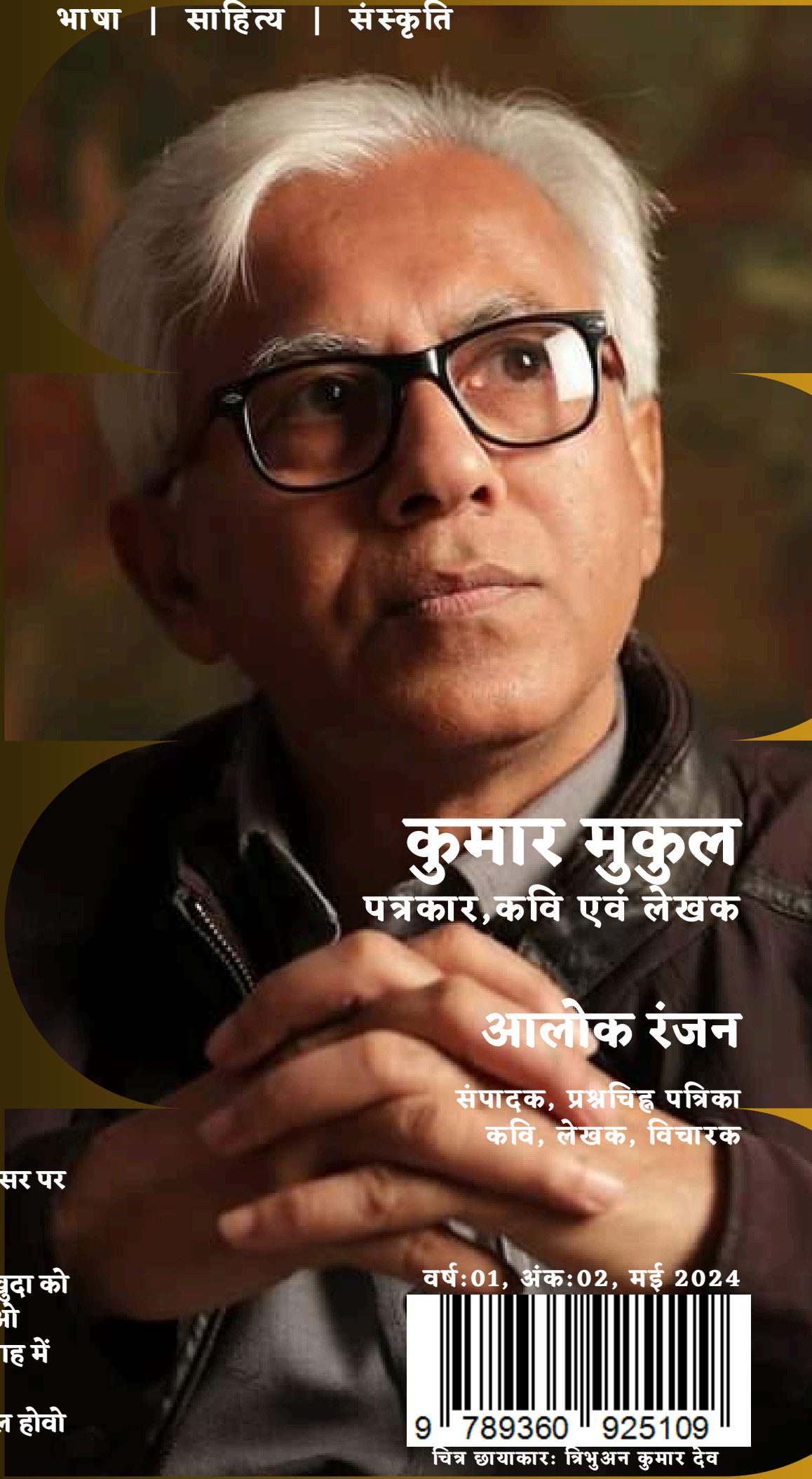

कुमार मुकुल
पत्रकार, कवि एवं लेखक

आलोक रंजन
संपादक, प्रश्नचिह्न पत्रिका
कवि, लेखक, विचारक

सीजफायर

जीवन की मोहलत
दे रहे हत्यारे
पवित्र, धार्मिक अवसर पर

जाओ, याद कर लो
अपने ईश्वर, गॉड, खुदा को
और वापस आ जाओ
अपने-अपने कत्लगाह में

कत्ल करो और कत्ल होवो
यही राष्ट्रवाद है।

वर्ष:01, अंक:02, मई 2024

9 789360 925109

चित्र छायाकार: त्रिभुअन कुमार देव

प्रकाशक: किताब राइटिंग प्रकाशन

भाषा | साहित्य | संस्कृति

प्रश्नचिह्न

मई 2024 | द्वितीय अंक

प्रकाशक:
किताब राइटिंग प्रकाशन

प्रबंध संपादक:
दिव्या त्रिवेदी

संपादक
आलोक रंजन

प्रबंध सहयोग: पीयूष पुष्पम

आवरण: सिमरन बामने

रेखांकन: दीया शर्मा

सहयोग
साधना भारतीय

प्रश्नचिह्न में प्रकाशित रचनाओं का सर्वाधिकार रचनाकारों के अधीन सुरक्षित है। प्रश्नचिह्न में प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचार, तथ्य लेखकों के अपने हैं। प्रश्नचिह्न में प्रकाशित रचनाओं के लिए किताब राइटिंग प्रकाशन, मुम्बई का सहमत होना आवश्यक नहीं है और न ही प्रकाशन इसके लिए उत्तरदायी है।

अनुक्रम

संपादकीय

कविता

कुमार मुकुल, डॉ वन्दना गुप्ता, रोज़लीन

दीपाली अग्रवाल, पराग पावन

पत्र

खुशी जयसवाल, दीपाली

कहानियां

डॉ रंजना जायसवाल, सुधा सिकरवार

व्यंग्य

लालित्य ललित, ललन चतुर्वेदी

विविध

अमन त्रिपाठी, दिनेश भाकर

साहित्य और समाज

"किसी का सत्य था,
मैंने संदर्भ में जोड़ दिया।
कोई मधुकोष काट लाया था,
मैंने निचोड़ लिया।
यो मैं कवि हूँ, आधुनिक हूँ, नया हूँ
काव्य-तत्त्व की खोज में कहाँ नहीं गया हूँ?
चाहता हूँ आप मुझे
एक-एक शब्द पर सराहते हुए पढ़ें।

पर प्रतिमा- अरे, वह तो
जैसी आप को रुचे आप स्वयं गढ़े।"

उपर्युक्त पंक्तियाँ सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन अज्ञेय की नया कवि, आत्म-स्वीकार से उद्धृत हैं। अज्ञेय ने रचना सृजन के दौरान की मनोस्थिति को बहुत ही बेहतरीन तरीके से यहाँ अभिव्यक्त किया है। साहित्य का आविर्भाव भी इसी समाज से होता है जिसे रचनाकार अपने भावों और विचारों के साथ मिलाकर उसे एक अच्छा आकार देता है। यही रचना समाज के नवनिर्माण में पथप्रदर्शक की भूमिका निभाने लगती है। अज्ञेय मानते हैं कि साहित्यकार होने के नाते अपने समाज के साथ उनका एक विशेष प्रकार का संबंध है- समाज से उनका आशय चाहे हिंदी भाषी समाज रहा हो जो कि उनका पहला पाठक होगा, चाहे भारतीय समाज जिसके काफी समय से संचित अनुभव को वे वाणी दे रहे होंगे, चाहे मानव समाज हो जो कि शब्द मात्र में अभिव्यक्त होने वाले मूल्यों की अंतिम कसौटी ही नहीं बल्कि उनका स्रोत भी है। किसी भी राष्ट्र या समाज के सांस्कृतिक स्तर का अनुमान उसके साहित्य के स्तर से लगाया जा सकता हैं।

साहित्य न केवल समाज का दर्पण होता हैं, बल्कि वह दीपक भी होता हैं, जो समाज का ध्यान उसकी बुराइयों की ओर दिलाता है, और एक आदर्श समाज का रूप प्रस्तुत करता है। यह माना जाता है कि किसी देश की सभ्यता तथा संस्कृति के इतिहास को पढ़ने के लिए उसके साहित्य को ही पढ़ना पर्याप्त होता है।

इसीलिए साहित्य किसी देश, समाज तथा उसकी सभ्यता या संस्कृति का दर्पण होता है। साहित्य और समाज का अविच्छिन्न संबंध है। समाज यदि आत्मा है तो साहित्य उसका शरीर है। बिना साहित्य के समाज का स्पष्ट प्रतिबिंब नही देखा जा सकता है। साहित्यकार एक समाज का ही अंग होता है। उसकी शिक्षा-दीक्षा समाज में ही होती है। उसे सामाजिक जीवन में ही अपने भावों और अपने विचारों को अभिव्यक्त करने की प्रेरणा मिलती है।

साहित्य में मूलत: तीन विशेषताएँ होती हैं जो इसके महत्त्व को रेखांकित करती हैं। उदाहरणस्वरूप साहित्य अतीत से प्रेरणा लेता है, वर्तमान को चित्रित करने का कार्य करता है और भविष्य का मार्गदर्शन करता है। साहित्य को समाज का दर्पण भी माना जाता है। हालाँकि जहाँ दर्पण मानवीय बाह्य विकृतियों और विशेषताओं का दर्शन कराता है वहीं साहित्य मानव की आंतरिक विकृतियों और खूबियों को चिह्नित करता है।

आपका-

आलोक रंजन

alokranjanoffice@gmail.com

prashanchinha.patrika@gmail.com

आदमी क्यों फैसले करता है

कुमार मुकुल

सम्पर्क: पटना ,बिहार
ईमेल: kumarmukul07@gmail.com

आदमी फैसला करता है ...
आदमी क्यों फैसले करता है ...

हवा फैसला नहीं करती
हर खुले फेफड़े में
जहां तक हो
समा जाना चाहती है वह

जमीन फैसला नहीं करती
हर बीज के लिए वह
मौसमों का इंतजार करती है

जल फैसला नहीं करता
भरता चलता है
हर खाली जगह को

आग फैसला नहीं करती
जो भी उसके घेरे में आता है
तपाती है उसे समान भाव से